योग का सहज स्वरूप

ब्र.कु.सूर्य....

जैसे-जैसे हम अपने पथ पर आगे बढ़ते जा रहे हैं, हमें कल्प पूर्व की सभी स्मृतियां आती जा रही हैं और एक दिन अवश्य ही हम स्मृति स्वरूप बन जायेंगे। फिर हमें योगी बनने के लिए अभ्यास की आवश्यकता नहीं रहेगी, बल्कि हम योग स्वरूप हो जायेंगे। जितना अधिक हमें, अपने वास्तविक स्वरूप का भान होता जा रहा है, योग हमारे लिए सरल रूप लेता जा रहा है। योग एक स्मृति अथवा भान है।

हम विचार करें - एक ओर गोप-गोपियां, जिन्होंने तपस्याएं नहीं की, ध्यान नहीं लगाया, वे त्यागी भी नहीं कहलाई और संन्यासी भी नहीं, दूसरी ओर वे ऋषि जिन्होंने कठिन तपस्याएं की, मन को मारा, जंगलों की राह ली, एकाग्रता से सिद्धियां प्राप्त की। परन्तु दोनों में महान कौन, परम भाग्यशाली कौन, किसका मार्ग सरल है, किसे श्रेष्ठ प्रप्तियां कहें? अवश्य ही ऋषि भी उन्हीं गोप-गोपियों के भाग्य की सराहना करते हैं, जो प्रभु-प्रेम में लवलीन हो चुकी थीं। जिनके मन में भगवान की छवि समा चुकी थी, जो भगवान को ही अपना सर्वस्व समर्पित कर चुकी थीं।

इसी प्रकार आओ, हम भी अपने योग को सरल स्वरूप दें। हम नि:संदेह वही गोप-गोपियां हैं, जो पुन: भगवान के साथ हैं और परमात्मा के हर दिव्य कर्त्तव्य को इन नयनों से निहार रहे हैं। साथ ही साथ हम ऋषि भी हैं जो एकाग्रता के बल से अनेक दिव्य शक्तियां प्राप्त कर रहे हैं। परन्तु जब हम गोप-गोपी स्वरूप से सर्व सम्बन्धों से परमपिता के सदा साथ का अनुभव करें, तब ही हमें ऋषि रूप से एकाग्रता व साइलेंस पावर की अनुभूति भी सहज रहेगी और हमें अनेक ईश्वरीय शक्तियां वरदान के रूप में प्राप्त होंगी।

तो आओ हम अपने वास्तविक स्वरूप को जानें और अपना सब कुछ एक को ही मन से मानें। हमारे जीवन में ये ईश्वरीय नशा समा जाए कि हमारे सम्बन्ध व सम्पर्क अब किससे हैं!

मैं कौन - हमें केवल यह जानना ही पर्याप्त नहीं कि मैं इस देह से भिन्न एक चेतन आत्मा हूँ, बल्कि मैं कौनसी आत्मा हूँ, सृष्टि के आदि से अंत तक मेरे कौन-कौन से मुख्य पार्ट रहे - इसका भान ज्यों-ज्यों आता रहेगा, हमारी आत्मिक स्थिति सरल रूप लेती जायेगी। हमें यह ईश्वरीय नशा बढ़ता जायेगा कि मैं ही वह हूँ, जिनसे भक्त मंदिरों में वरदान की याचना कर रहे हैं, आदि-आदि...। जैसे-जैसे इस सृष्टि चक्र में स्वयं का महत्व ज्ञात होता जायेगा, जीवन महानताओं से ओत-प्रोत होता चला जायेगा। जैसे-जैसे स्वयं की महानताओं का एहसास होता जायेगा, 'मैं पन' जीवन से दूर जाता रहेगा। अत: 'मैं कौन हूँ' - इसका चिंतन हरेक योगी को एकांत में रमणकर अवश्य करना चाहिए।

मेरा बाप कौन - जरा विचार तो करो, हमारा बाप कौन है! हम किसकी संतान बनें हैं!! हमारे पीछे कौन है!! इस जग में एक प्रधानमंत्री के पुत्र को कितना नशा रहता है। उसकी चाल-ढाल, बोल, कर्म, कदम, विचार सब कितने नशे युक्त हो जाते हैं। उसे ख्याल रहने लगता है, मेरा बाप है, मेरे पीछे कौन है? इसी प्रकार हमें यह नशा चढ़ता जाए कि हम किसके हैं - यह नशा ही हमारे जीवन परिवर्तन का आधार बन जायेगा। मेरा बाप वही है जिसे भक्त भगवान कहकर, मंदिरों और गुफाओं में एक झलक पाने को तरस रहे हैं। मेरा परमपिता वही है जिससे मिलने के लिए बड़े-बड़े ऋषि घोर तपस्या कर रहे हैं। अब मेरा वह परमपिता मेरे पास है... आदि, आदि...।

मेरा परम शिक्षक कौन? - जरा ख्याल करो, तुम्हें किसने पढ़ाया! लोग जिसे ढूंढ-ढूंढ कर हार गये, जिसकी एक आवाज सुनने के लिए लोगों ने कठिन प्रयास किये, उसी की मधुर वाणी ने तुम्हारे कानों को मधुर बनाया!! जिन रहस्यों को बड़े-बड़े विद्वान न जाने सके, वे सभी रहस्य उस परम-शिक्षक ने तुम्हें हंसते-बहलते सुना दिये। जिन उलझनों में

जिन रहस्यों को बड़े-बड़े विद्वान न जाने सके, वे सभी रहस्य उस परम-शिक्षक ने तुम्हें हंसते-बहलते सुना दिये। जिन उलझनों में शास्त्रार्थ महारथी शास्त्रार्थ कर रहे थे, उन गुत्थियों को उसने अति सरलता से सुलझा दिया। क्या कभी तुमने चित्त के पर्दे खोल कर विचारा है कि तुम किसके विद्यार्थी हो।

शास्त्रार्थ महारथी शास्त्रार्थ कर रहे थे, उन गुत्थियों को उसने अति सरलता से सुलझा दिया। क्या कभी तुमने चित्त के पर्दे खोल कर विचारा है कि तुम किसके विद्यार्थी हो। कितनी बड़ी अथार्टी उस ज्ञान-दाता ने तुम्हें दी है। तुम्हें स्वयं उसने पढ़ाया जो ज्ञान का भण्डार व त्रिकालदर्शी है। इसे कहा जाता है परम-शिक्षक की याद व उससे असीम प्यार। इस दुनिया में अगर कोई पी.एच.डी. या आई.ए.एस. की डिग्री लेता है तो उसके कदम धरती पर नहीं टिकते। और तुम - तुम्हें सर्वश्रेष्ठ व सम्पूर्ण ज्ञान, सम्पूर्ण सत्य मिला। तो तुम्हें कितना नशा हो! और यह नशा सहज ही आत्मा को बलवान बना देता है।

मेरा परम सतगुरु कौन? - इस संसार में कई मनुष्यों को बड़ा ही गर्व रहता है कि हम फलाने गुरु के शिष्य हैं। हमारा गुरु ऐसा-ऐसा सिद्ध पुरुष है। परन्तु हे ब्रह्मा-वत्सों, तुम्हें किसने अपनी शरण दी है। वो सर्व-शक्तिमान, सर्व का मार्ग प्रदर्शक, मुक्ति-दाता, भाग्य विधाता, स्वयं तुम्हारा सद्गुरु बना है। जो सब गुरुओं का भी उद्धार कर्त्ता है, उसी ने तुम्हें अपनाया है। जरा विचार करो। उसने तुम्हें अपनी छत्र-छाया में बिठाकर सुरक्षित किया, यहीं पर तुम्हें बंधन मुक्त बनाया, यहीं मुक्ति व स्वर्ग का आभास कराया। तो तुम्हें कितना गौरव हो, कि जिसकी शरण में ये सभी गुरु भी आराम लेने दौड़ेंगे, उसका हाथ तुम्हारे सिर पर है। तुम्हें उसने इतना स्पष्ट पथ दर्शाया जो तुम्हारे लिए कुछ भी रहस्य नहीं रहा। इसी तरह का ईश्वरीय रुहाव परम सद्गुरू की याद कहलाता है। यह रुहाब हमें उसकी श्री मत के प्रति श्रद्धा जागृत करता है और श्रीमत से ही कल्याण का एहसास कराता है।

मेरा परम प्रियतम कौन? - ऋषि मुनि भी उन गोपियों के भाग्य पर ईर्ष्या करते होंगे जिन्होंने स्वयं भगवान को मन से अपना प्रियतम स्वीकार किया। जिन्होंने केवल एक की ही छवि मन में बसाई थी। अनेक गीत गा-गाकर भी आज के भक्त अपना मन बहलाया करते हैं।

यहां किसी कन्या की शादी किसी धनवान, गुणवान या विद्यमान पति से हो जाए तो उसकी खुशी और नशे का हाल मत पूछो। और हम रूहों ने तो उस परम प्रियतम का वरण किया है, जो पतियों का पति और रूहों का सच्चा सहारा है। उसकी याद के सिवाए अन्य किसी की भी छवि हमारे मन में नहीं बस सकती। उसे भूल अन्य किसी को मन में बसाना वफादारी व पति व्रत नहीं है। उससे अधिक रूपवान, उस जैसा गुणवान, प्रभु जैसा विद्यावान और बलवान कोई भी नहीं। तो हम सजनियों को अपने उस सच्चे प्रियतम पर कितना नाज हो। उस जैसा और कोई नहीं... भले ही वह निराकार हो, परन्तु वह अपनी समस्त अनुभूति साकार में ही हमें कराता है। हम स्वप्न में भी अन्य किसी का वरण नहीं कर सकते। हमारा उससे इतना प्यार हो जाए कि हमें उसके सिवाए कुछ भी दिखाई न दे।

मेरा परम मित्र कौन? - वह परम मित्र जो विपदा में हाथ बढ़ाता है, जो रोतों के आंसू पोंछता है, जो गिरतों को सहारा देता है, ऐसा भगवान मेरा सच्चा मीत आ बना है। मुझे उससे मित्रता निभानी है। उस मित्र से किए हुए वायदे पूरे करने हैं। सदा उसी मित्र के साथ में खेलूं... उसी से मन बहलाया करूं... उसी मित्र से आँख मिचौनी करता रहूं...। ऐसे सच्चे हितैषी मित्र को भला कौन भूल सकता है। जो कभी भी हमसे दूर नहीं होता, हमें अकेला नहीं छोड़ता। इस प्रकार हम अपने मित्र से मित्रता बढ़ायें और उसे भूले नहीं।

मेरा रक्षक कौन? - स्वयं सर्वशक्तिवान... जिसके एक इशारे पर मैदान साफ हो जाते हैं, जिसकी दृष्टि पड़ते ही पापियों के दिल दहल जाते हैं... ऐसे सर्व समर्थ की छाया मेरे ऊपर है। ये स्मृति बड़ी दृढ़ व निर्भीक बना देती है। हम अपने रक्षक को भूलकर ही भयभीत होते हैं, स्वयं के मन को उलझाते हैं। हम सब जानते हैं कि उसकी छत्र-छाया में ही सदा पाण्डवों की रक्षा होती रही। पाण्डव कभी भूखे भी नहीं रहे। तो भला हमारा अहति कहां होने वाला है।

इस प्रकार से सर्व सम्बन्धों की याद हमारे जीवन को अति रूहाब युक्त व महान बना देती है। स्मृतियों में रहने से योग, कठिन अभ्यास का विषय नहीं रह जाता बल्कि उसकी याद मन में समाई रहती है। मन स्वत: ही शांत रहता है और हमें बार-बार कठिन तपस्या करने की आवश्यकता नहीं रहती। यही है याद का सहज स्वरूप।

कानुपर। दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी, महामंडलेश्वर जन्मेजय शरण जी महाराज, ब्र.कु.उषा बहन, ब्र.कु.विद्या बहन एवं ब्र.कु.स्वामीनाथन।

हैदराबाद। ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.सरला बहन को 'यौगिक खेती' के लिए सम्मानित करते हुए विधायी परिषद के अध्यक्ष चक्रपाणि।

भिवंडी। प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् निलेश चौधरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.अलका बहन।

चंद्रपुर, वाडसा। चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन करने के पश्चात् म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष किशन कुमार नगदेव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कुंदा बहन।

हाजीपुर। चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन करने के पश्चात् डी.डी.सी उमाशंकर प्रसाद को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.अंजली बहन।

जोधपुर। अणुव्रत समिति की ओर से आयोजित 'सर्व धर्म सम्मेलन' में उपस्थित हैं ब्र.कु.शील बहन तथा अन्य।